११. पंचगव्य

वैद्यजी! आयुर्वेद और धर्म में पंचगव्य को बहुत महत्त्व दिया गया है, यह क्या है?
गव्य यानी गाय से प्राप्त। पंचगव्य यानी दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र। इन्हें एक विशेष अनुपात व मंत्र विधि से मिलाने से जो दिव्य औषधि बनती है, उसे भी पंचगव्य कहते हैं।

धर्म का अर्थ है ? एक ऐसी व्यवस्था, जो मनुष्य को नीचे गिरने से रोके और ऊपर उठने में सहायता करे क्योंकि मनुष्य देवों से भी ऊपर उठ सकता है....

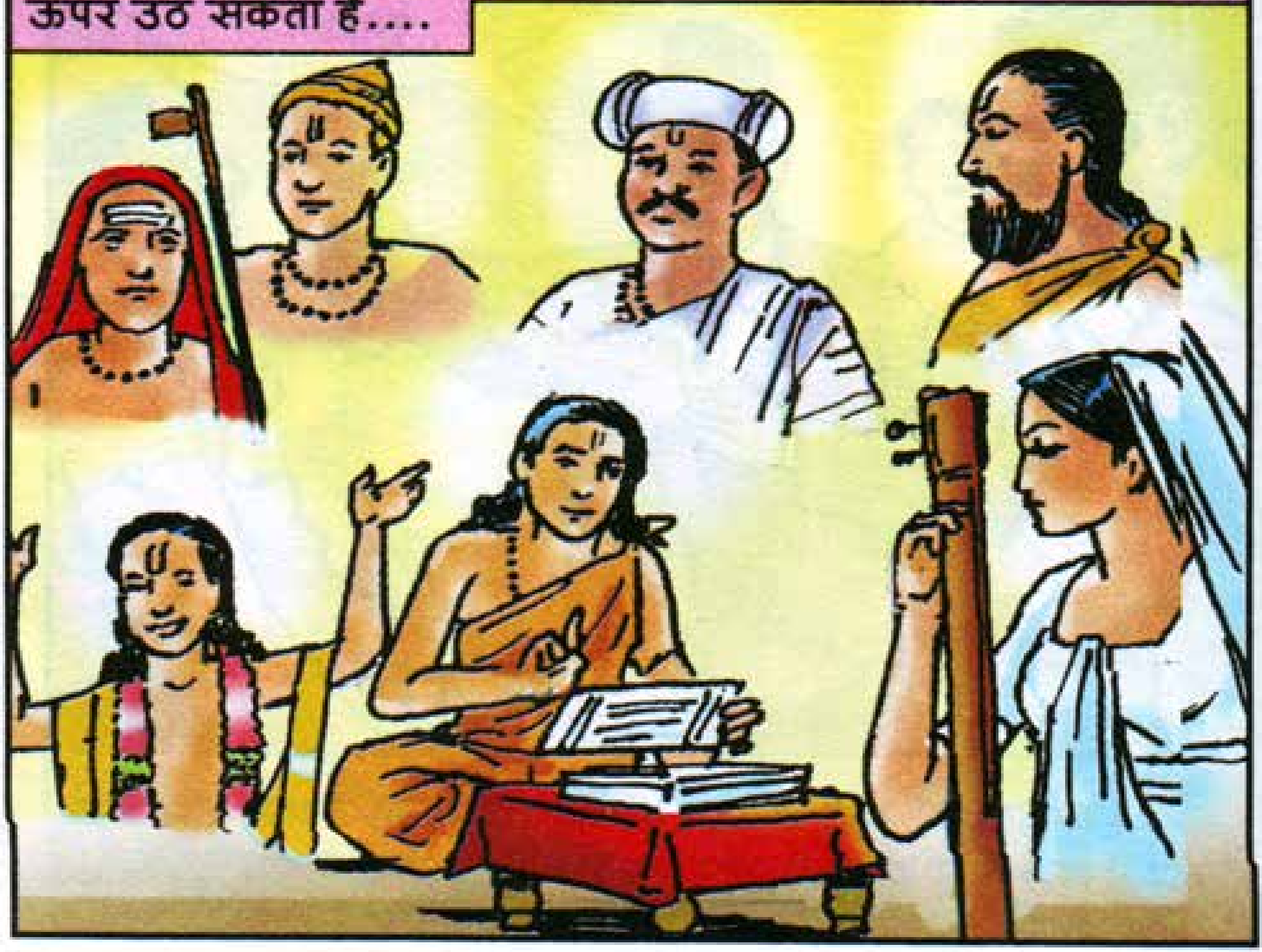

.....तो दानव से भी नीचे गिर सकता है

नेताजी! आपने ऐसा कानून बनाया है कि केवल बूढ़ी और विकलांग गायों को काटा जा सकता है। इससे तो हमारा कत्लखाना ही बंद हो जायेगा।

मालिक! हम तो केवल कानून पास करते हैं। कानून का मसौदा तो सचिव तैयार करते हैं।

सर! आपको पता है, गोहत्या-बंदी के लिए जनता का कितना दबाव है?.... जब आप हमारे विदेशी खाते में धन जमा कराते रहते हैं, तो क्या हम भी आपका ध्यान नहीं रखेंगे?

आप किसी भी उम्र की गाय-बैल के पैर तोड़कर या आँख फोड़कर विकलांग का प्रमाण-पत्र बनवा लो। फिर काटने से कौन रोक सकता है ? कानून यानी जनता की आँखों में धूल झोंकना, धंधा बंद करना नहीं। हम नमकहलाल हैं, नमकहराम नहीं ? क्यों नेताजी ?
हा..हा..हा
भारत की गरीबी का कारण बढ़ती जनसंख्या नहीं, देशद्रोहियों के माध्यम से विदेशी बैंकों में गये खरबों रुपये हैं।

मनुष्य के जीवन में ऐसे १६ प्रसंग आते हैं, जब वह ऊपर या नीचे जा सकता है। उस समय संस्कार किये जाने से वह ऊपर उठ सकता है। पंचगव्य बिना ये १६ संस्कार संभव नहीं।

१६ संस्कार हैं

गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन,
जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण,
अन्नप्राशन, चूडाकर्म (मुंडन), कर्णविध,
यज्ञोपवीत, विद्यारम्भ, समावर्तन, विवाह,
वानप्रस्थ, संन्यास, अंत्येष्टि।

हिन्दुओं ने इन १६ संस्कारों का आविष्कार किया और गाय के महत्त्व को समझा। इसलिए हिन्दू धर्म में गाय का विशेष महत्त्व है।